Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

भ्रमरगीत काव्य परम्परा

Dr. Suman Mishra (M.A., PhD),

Vivekanand College of Arts,

Ahmadabad. +91-7573080474

प्रस्तुत शीर्षक के अंतर्गत भ्रमरगीत काव्य परम्परा के सन्दर्भ में जानकरी प्राप्त करने से पूर्व भ्रमरगीत शब्द का शाब्दिक अर्थ प्रस्तुत किया है तदन्तर कैसे -कैसे भ्रमरगीत परम्परा का साहित्य में सूत्रपात हुआ का चित्रण सांगोपांग रूप से चित्रित किया गया है |जो संक्षेप्त में इस प्रकार है | भ्रमरगीत शब्द के शाब्दिक अर्थ के संदर्भ में डाक्टर सत्येन्द्र का कथन है कि "पति को लक्ष्य करके लिखा गया गीत ही भ्रमरगीत है "|इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है की भ्रमर एक माध्यम है | जिसके बहाने कोई प्रेमी या बिरही अन्योक्ति का सहारा लेते हुए अपनी हृदयस्थ भावनाओ को अभिव्यक्ति देता है | अत: कह सकते है कि भ्रमर गीत कृष्ण काव्य का एक मार्मिक प्रसंग है | इसमे गोपियों का विरह भाव उद्वव के समक्ष भ्रमर के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है | अब यहाँ एक प्रमुख प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भ्रमर को ही क्यों अभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार किया | समाधान हेतु कहा गया कि इन तीनो कृष्ण ,उद्वव और भ्रमर में समानताएं दृष्टिगत होतीं है जैसे वर्ण साम्य,वेशभूषा की समानता ,वंशी एवं भ्रमर के गुंजार की समानता आदि |

भ्रमरगीत सस्कृत साहित्य में

भ्रमर गीत परम्परा का सर्वप्रथम उदगम स्रोत सामान्यत; भागवत पुराण के दशम स्कन्ध के ४६ वे ४७ वे हिंअध्याय में उद्वव गोपी संवाद सम्बन्धी इति वृति को माना जा सकता है |

हिंदी साहित्य में - हिंदी साहित्य के अंतर्गत शुद्ध भ्रमर गीत के प्रणेता के रूप में प्रथम और विशिष्ट नाम सूरदास का ही है सुर ने अपने भ्रमर गीत में न केवल गोपियों के उपालम्बो और उनकी विरह वेदना का वर्णन किया है प्रत्युत नन्द और यशोदा के वात्सल्य पूरित हृदय का अद्भुत और मनोरम झाकी प्रस्तुत की |

भक्तिकालीन भ्रमरगीत परम्परा के अंतर्गत अनेक कवियों ने अपने -अपने मेधानुसार इस प्रसग को प्रस्तुत किया |भक्ति काल से प्रसारित होती हुई यह परम्परा आधुनिक साहित्य में भी पदार्पण किया जिसमे भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय ह्रिओध ,जगन्नाथ दास रत्नाकर ,सत्यनारायण कवि रत्न ,मैथिलि शरण गुप्त डाक्टर रमा शंकर शुक्ल रसाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है | अत; इन समस्त का विवेचन अग्र लिखित है |

भ्रमर गीत का कथानक स्रोत ---

जिस प्रकार कृष्ण भक्ति के अन्य प्रसंगों का आधार श्रीमद्भागवत् पुराण है उसी प्रकार भ्रमर गीत प्रसंग का आधार भी यही ग्रन्थ है | भागवत के दशम स्कन्ध अध्याय ४६वें ४७वें में श्री कृष्ण की लीलाओ का गा न है | इस परिप्रेक्ष में कहा जाता है की भ्रमर गीत का कथानक श्रोत श्रीमद भागवत ही है | यहाँ से आधार ग्रहण करके सूर ने अपनी मोलिकता के आधार पर भ्रमर गीत की एक पृथक सरिता प्रवाहित की है जो हिंदी साहित्य में सर्वोच स्थान का अधिकारी है

डाक्टर श्याम सुंदर दास ने भ्रमर गीत को भ्रमर नाद छद में लिखित माना है | उनके विचारानुसार छद में छ: चरण होते है प्रथम चार चरणों में २४ -२४ मात्राएं होती है और अंतिम दो चरण में १० -१० मात्राएं होती हैं | इसके अतिरिक्त कहा जाता है की भ्रमर एक माध्यम है जिसे अन्योत्ति बनाकर जो सामने नही कहा जा सकता वह भी कह दिया जाता है | अब यहाँ एक विचारणीय प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भ्रमर गीत प्रसंग का नाम भ्रमर गीत ही क्यों पड़ा ? वास्तविक रूप से यदि देखा जाय तो यह एक ऐसा नामकरण है जो गोपियों की मनोदशा और उनमे क्षण प्रति क्षण आने जाने वाले भावों की अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा उपयुक्त है |

भ्रमर गीत संस्कृत साहित्य में --- भ्रमर गीत परम्परा का अनुशीलन करते हुए हरवंश लाल शर्मा ने कालिदास द्वारा विरचित संस्कृत नाटक काव्य अभिज्ञान शाकुंतलम में राजा दुष्यंत की पहली रानी हंस पदिका द्वारा शकुंतला के प्रेम में डूबे हुए दुष्यंत को जो उपलाम्ब भ्रमर को सम्बोधित करते हुए दिया गया है उसे ही प्रथम भ्रमर गीत घोषित किया गया है |" २

चलापागा दृष्टि स्प्रिशसि बहुधा बेपथूमति

रहस्या ख्यायीव स्वनसि मृदु कर्ण अंतीकचरह

अत: कहा जाता है कि यह परम्परा संस्कृत साहित्य से प्रवाहित होती हुई हिंदी साहित्य में विस्तार रूप ग्रहण करती है | ३

हिंदी साहित्य में भ्रमर गीत परम्परा ----

हिंदी साहित्य में भ्रमर गीत परम्परा सूरदास,गोस्वामी तुलसी दास अष्ट छाप के समस्त कवियों ने और अन्य अनेक आधुनिक कवियों ने यथा भारतेंदु हरिश्चंद्र ,बद्रीनारायण,सत्यनारायण ,कवि रत्न ,जगन्नाथ दास रत्नाकर ,मैथिलीशरण गुप्त ,हरिऔध ,रसाल ,द्वारिका प्रसाद मिश्र ,आदि कवियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाने में सराहनीय योगदान दिया है | हिंदी में भ्रमर गीत परम्परा सोलहवीं शताब्दी से शुरू हुई और २०वीं शताब्दी तक निर्बाध रूप से चलती रही

भक्तिकालीन भ्रमर गीत परम्परा

सूर का भ्रमर गीत तीन प्रकार का है प्रथम तो तीन सौ पदों का है जिसमे नन्द यशोदा और गोपियों का विरह वर्णन है |इसकी समानता हिंदी साहित्य का कोई भी शब्द नही कर सकता | इस विस्तृत भ्रमर गीत के अतिरिक्त दूसरे भ्रमर गीत की रचना केवल दो पदों में की गयी है | प्रथम पद उद्धव ब्रज आगमन ,गोपियों की आशा निराशा ,कुब्जा पर व्यंग्य ,और कृष्ण के पुनर्मिलन की आशा का वर्णनहै और दुसरे में उद्धव द्वारा ज्ञानोपदेश ,गोपियों का प्रतिवाद और उद्धव के भक्त बनकर लोटने का वर्णन है | अंत में भ्रमर गीत सुनने सुनाने का महत्व है | तीसरा भ्रमर गीत केवल एक ही पद का है जो सत्तर पंक्तियो का है | इसके अंतर्गत गोपियाँ अधिक व्यवहार प्रद प्रतीत होती है | इसका आरम्भ उद्धव के उपदेश से ही होता है |

नन्ददास का भंवर गीत ---भक्तिकालीनभ्रमर गीत परम्परा के दूसरे सशक्त हस्ताक्षर नन्दास है | नन्ददास अष्टछाप के चंद्रमा हैं| इसका आरम्भ -

“उधौ का उपदेश सुनौ ब्रज नागरी |”

अष्ट छाप के कवियों में परमानंददास उचित स्थान के अधिकारी हैं भक्तिकालीन भ्रमरगीत काव्य परम्परा में परमानंददास ने अपना योगदान दिया | कृष्णदास का भी अपना विशेष योगदान इस परम्परा में रहा |भक्तिकालीन हिंदी साहित्य में भ्रमर गीत परम्परा को आगे बढाने वाले कवियों में गोस्वामी जी कृष्ण गीतावली में इस परम्परा से सबंधित कुछ पदों का समावेश किया है |

रीतिकालीन भ्रमरगीत परम्परा - रीतिकाल में भी भ्रमरगीत परम्परा चलती रही है |रीतिकालीन कवियों ने जिस प्रकार भक्ति को हृदय की नहीं वरन काव्य की आवश्यकता मानकर स्वीकार किया उसी प्रकार भ्रमरगीत परम्परा को भी काव्य की आवश्यकता मानकर ग्रहण किया | यही कारण है की रीतिकाल के अधिकाश कवियों ने भ्रमरगीत की योजना बद्ध रचना नहीं की है | इस श्रृंखला में काम करने वाले कवि देव ,बिहारी ,मतिराम ,पद्माकर आदि कवियों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है |

आधुनिक साहित्य में भ्रमर गीत परम्परा - आधुनिककाल के संदर्भ में यदि विचार किया जाय तो यह स्पस्ट रूप से परिलक्षित होता है कि यह काल जनक्रांति और भाव क्रांति का काल है

आधुनिककाल के प्रमुख भ्रमर गीत कारो में भारतेंदु हरिश्चंद्र,अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ,जगन्नाथ दास रत्नाकर ,सत्यनारायन कवि रत्न ,मैथिलीशरण गुप्त डाक्टर रमा संकर शुक्ल रसाल का नाम विशेष रूप से उलेखनीय है | आधुनिककाल के भ्रमर गीत परम्परा में मानदंड के रूप में उपस्थित जगन्नाथ दास रत्नाकर का उद्ववशतक उज्ज्वल रत्न है | भ्रमर गीत परम्परा को सम्वृध प्रदान करने वाले इन कवियों के अतिरिक्त अन्य कवि बदरीनारायण चौधरी ,प्रेमधन रसीले ,राजेश्वरी प्रसाद सिंह ,मुकुन्दीलाल जगनाथ सहाय,दवारिका प्रसाद मिश्र और श्याम सुंदर लाल दीक्षित के नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं |

उपर्युक्त सम्यक विवेचन के उपरांत संक्षेप में कह सकते है कि सूरदास हिंदी के पहले कवि हैं जिन्होंने भ्रमर गीत प्रसंग को लेकर रचना की है |सूरदास का समस्त सूरसागर उनकी काव्य प्रतिभा से जगमगा रहा है |सूरकाव्य में भ्रमर गीत प्रसंग को लेकर उन्होंने एक विशिष्ट परम्परा का सूत्रपात किया है | भ्रमर गीत को सूरदास अपनी मौलिकता के द्वारा सर्वथा एक नये रूप में प्रस्तुत किया है | अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए मानव मस्तिष्क प्रतीकात्मक भाषा का सहारा लेता है | इस लिए प्रतीकात्मक के मूल में एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया कार्य करती है | अतेव इस भ्रमर गीत परम्परा में सूरदास सर्वश्रेठ हैं|

संदर्भ ग्रन्थ

- **दीनदयालु गुप्त अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय ----हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग स.२००४**
- **द्वारिकादास पारीख प्रभु दयाल मित्तल ,अग्रवाल प्रेस ,मथुरा**
- **देव राज साहित्य और संस्कृति ,---वाराणसी -१९५८**
- **देव राज सिंह भाटी सूर और उनका साहित्य ---विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा**
- **आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा हिंदी भाषा का विकास -राधा कृष्णन प्रकाशन दिल्ली ,१९७१**
- **डाक्टर नगेन्द्र हिंदी साहित्य का इतिहास -नेशनल पब्लिशिंग हॉउस दिल्ली १९७३**
- **सम्मेलन प्रयाग -अग्रवाल प्रेस मथुरा ,प्रथम संस्करण**
- **अयोध्या प्रसाद उपाध्याय हरिऔध - प्रियप्रवास -हिंदी साहित्य कुटीर ,बनारस २०१३**
- **जयदेव गीत गोविन्द**
- **प्रभु दयाल मित्तल अष्टछाप परिचय -अग्रवाल प्रेस मथुरा ,प्रथम संस्करण**
- **प्रभु दयाल मित्तल ब्रज भाषा साहित्य का नायिका भेद , अग्रवाल प्रेस ,मथुरा २००५**